6
अपने पति के साथ पत्नी का सम्बन्ध

''हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है।... इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है'' (इफिसियों 5:22-28)।

कई लोग यीशु और नये नियम की शिक्षाओं को मानने को तैयार लगते हैं, जब तक उन्हें पता न चले कि क्या सिखाया गया है। यीशु के कुछ अनुयायियों ने यूहन्ना 6:65, 66 में उसकी एक बात को नहीं माना था:

> इसलिए मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता। इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।

हमें यीशु की सिखाई हर बात को मानना आवश्यक है। यदि हम उसके चेले केवल तभी हैं जब शिक्षा वह है जो हम सुनना चाहते हैं, तो वास्तव में उसके चेले नहीं हैं। बल्कि हम अपने ही तरीके से चलने वाले लोग हैं।

कई लोग सुसमाचार की पुस्तकों को तो मानते हैं, पर दावा करते हैं कि नये नियम की अन्य पुस्तकों में यीशु की शिक्षा नहीं है। वे यीशु की सब बातों को ग्रहण करने में असफल रहते हैं। पवित्र आत्मा के द्वारा उसने नये नियम की सब पुस्तकें लिखने की प्रेरणा दी (यूहन्ना 14:26; 16:12-14; 1 कुरिन्थियों 14:37)। जो सच्चाई यीशु ने प्रकट की उस सबको जानने के लिए हमें सुसामाचार की चार पुस्तकों से कहीं अधिक की आवश्यकता है।

उत्पत्ति 2 अध्याय के एक वाक्य की ओर संकेत करते हुए पौलुस यीशु की अगुआई में ही चल रहा था और इफिसियों 5:29-31 लिखते समय उसकी शिक्षा इससे मेल खाती थी। यीशु ने विवाह पर अपनी शिक्षा में उत्पत्ति का हवाला दिया था। उसने पूछा, ''क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, कि इस कारण मुनष्य अपने माता-पिता और वे दोनों एक तन होंगे?'' (मत्ती 19:4, 5; देखें उत्पत्ति

2:24)। इस प्रकार यीशु ने पुरुषो और स्त्रीं के सम्बन्ध के विषय में उत्पत्ति की पुस्तक में कही गई बातों के लिए अपनी स्वीकृति जताई की। इसी प्रकार पौलुस ने पुरुषों और स्त्रियों के सम्बन्ध के बारे में उत्पत्ति की बातें बताईं।

पति का काम

विवाह के सम्बन्ध में ज़िम्मेदारी का आरम्भ पति से होता है। जैसे परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध उसी से आरम्भ होता और उसी पर निर्भर है, वैसे ही उसके कन्धों पर सही ढंग से विवाह की अगुआई करने का बोझ होता है। जैसे परमेश्वर ने बलिदान पूर्वक प्रेम के साथ सब लोगों तक पहुंच की है, वैसे ही बलिदानपूर्वक प्रेम के साथ अपनी पत्नी तक पहुंच करना आवश्यक है (इफिसियों 5:25, 28; कुलुस्सियों 3:19)। वह आधार है, जिस पर वैवाहिक सम्बन्ध बना है।

पतरस ने लिखा, ''वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हर दोनों जीवन के बरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं'' (1 पतरस 3:7)। किसी पति को अपनी पत्नी पर हुकम चलाने, उस पर शासन करने या उसके बॉस की तरह काम करने का अधिकार नहीं है। उसे अपनी पत्नी के साथ विचारशील, स्वबलिदान करने वाला और समझदार ढंग से व्यवहार करने वाले होना चाहिए। परमेश्वर ने पति को शारीरिक बराबरी के रूप में अपनी पत्नी से व्यवहार करने का अधिकार नहीं दिया है। उससे पति की क्रूरता से अपने आप को बचाने की उम्मीद नहीं की जा सकती। उसे उसके शारीरिक, साथी होने के साथ-साथ आत्मिक साथी के रूप में सम्मान और आदर दिया जाना आवश्यक है। इस प्रकार मसीहियत ने पति/पत्नी सम्बन्ध में स्त्री को ऊंचा किया है।

पत्नी का काम

पत्नी के लिए अपने पति की अगुआई स्वेच्छा से मानना आवश्यक है। वह उसे अपने अधीन लाने के लिए क्रूर शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। पत्नी के लिए स्वेच्छा से अपने पति के साथ सहयोग करना आवश्यक है क्योंकि वह उसकी भलाई के लिए परिवार की चिन्ताओं की ओर ध्यान लगाना चाहता है। उसकी ओर से की गई क्रूरता या पत्नी का विद्रोह यीशु की इच्छा के विरुद्ध होगा।

अधीनता

पुरुष हो या स्त्री हर व्यक्ति किसी न किसी के ''अधीन'' (यू.: *hupotasso*) होने की ज़िम्मेदारी होती है, चाहे जीवन में उसकी कोई भी पदवी या रुतबा क्यों न हो। आइए ''अधीनता'' पर बाइबल के कुछ कथनों पर विचार करते हैं:

(1) यीशु अपने माता-पिता के अधीन था (लूका 2:51)। (2) दुष्ट आत्मा सत्तर

चेलों के वश थे (लूका 10:17, 20)। (3) परमेश्वर ने सृष्टि को अपनी इच्छा के अधीन बनाया (रोमियों 8:20)। (4) नागरिकसरकार के अधीन होते हैं (रोमियों 13:1, 5; 1 पतरस 2:13; तीतुस 3:1)। (5) परमेश्वर ने सब कुछ यीशु के अधीन बनाया (1 कुरिन्थियों 15:27; इफिसियों 1:22; इब्रानियों 2:8)। (6) कलीसिया यीशु के अधीन है (इफिसियों 5:24)। (7) हम परमेश्वर के अधीन हैं (इब्रानियों 12:9; याकूब 4:7)। (8) सेवकों को अपने स्वामियों के अधीन होना आवश्यक है (तीतुस 2:9; 1 पतरस 2:18)। (9) स्वर्गदूत और अधिकार यीशु के अधीन किए गए हैं (1 पतरस 3:22)। (10) जवान मसीहियों के लिए बूढ़े मसीहियों के अधीन होना आवश्यक है (1 पतरस 5:5)।

यूनानी शब्द *hupotasso* जिसका इस्तेमाल ऊपर दिए सब उदाहरणों में अधीनता को दर्शाने के लिए किया गया है। वही शब्द है, जिसका इस्तेमाल पति के प्रति पत्नी की ज़िम्मेदारी बताने के लिए किया गया है (इफिसियों 5:22, 24; कुलुस्सियों 3:18; तीतुस 2:5; 1 पतरस 3:1, 5)। दो शब्दों *hupo* (''अधीन'') और *tasso* (''प्रबन्ध'') से बने इस शब्द का अर्थ है ''आज्ञाकारी होना, विनम्र; अधीनता स्वीकार करना।'' पति को विशेष रूप से पत्नी को अधीन करने की आज्ञा नहीं है पर पत्नी को विशेष रूप से अपने पति के अधीन होने की आज्ञा है। एक-दूसरे के अधीन होने के अलावा (इफिसियों 5:21; 1 कुरिन्थियों 16:16), एक-दूसरे के अधीन होने की परमेश्वर की आज्ञा हमें उनके अधीन होने की जिम्मेदारी से बचाती नहीं है, जो हमारे ऊपर अधिकारी हैं। यदि कोई मसीही किसी का गुलाम है तो उसे अपने मालिक की अधीनता स्वीकार करना आवश्यक है। नागरिक के लिए सरकार के अधीन होना और जवान के लिए बुजुर्ग के अधीन होना आवश्यक है पर इसी अर्थ में इसके विपरित नहीं हो सकता। यही बात पति/पत्नी के सम्बन्ध में भी लागू होती है:

> हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के आधीन रहें (इफिसियों 5:22-24)।

> हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, वैसा ही अपने अपने पति के आधीन रहो (कुलुस्सियों 3:18)।

> इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियां ... जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें, कि ... अपने अपने पति के आधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए (तीतुस 2:3-5)

> हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो ... (1 पतरस 3:1)।

मसीही होने से किसी गुलाम को अपने मालिक से विद्रोह करने का अधिकार, नागरिक को सरकार से विद्रोह करने का अधिकार, जवान को बुज़ुर्ग से विद्रोह करने का अधिकार या मसीही पत्नी को अपने पति से विद्रोह करने का अधिकार नहीं मिल जाता। इन प्रबन्धों में अधिकार पाए हुए किसी के भी द्वारा परमेश्वर की इच्छा के विपरीत निर्णय लेने से मानवीय अधिकार का उल्लंघन करने का सही कारण मिल जाता है (प्रेरितों 5:29)।

पत्नी के लिए अपने पति के अधीन होना आवश्यक है क्योंकि परमेश्वर ने उसे उसका सिर बनाया है (1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 5:23)। यूनानी शब्द *kephale* के अनुवाद ''सिर'' के कई अर्थ हैं। (1) सिर देह का वह भाग होता है, जो शेष देह को नियन्त्रित करता है (मत्ती 5:36; 6:17; 8:20; 10:30)। (2) सिर को विशेष स्थिति दी गई है, जिससे शेष देह जुड़ी हुई है, जैसे शेष इमारत से कोने का सिरा जुड़ा होता है (मत्ती 21:42; मरकुस 12:10; लूका 20:17; प्रेरितों 4:11; 1 पतरस 2:7)। (3) जो सिर के अधिकार के नीचे हैं, वे सिर प्रति ज़िम्मेदार हैं। परमेश्वर मसीह का सिर है, और मसीह पुरुष का सिर है। मसीह कलीसिया का भी सिर है (इफिसियों 1:22; 4:15; 5:23; कुलुस्सियों 1:18) और सब अधिकारों पर सिर है (कुलुस्सियों 2:10)। (4) पुरुष की ज़िम्मेदारी पति/पत्नी के सम्बन्ध में स्त्री के सिर के रूप में अगुआई देना है (1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 5:23)।

जो ''सिर'' है, उसके पास अधिकार की ज़िम्मेदारी है, इस अधिकार का सही प्रत्युत्तर स्वेच्छा से अधीनता को मानता है। यीशु ने अपने सिर अर्थात पिता और अपने माता-पिता (लूका 2:51) के आगे दीन होकर उसकी बात मानकर अपने आप को छोटा नहीं, बल्कि ऊंचा किया (फिलिप्पियों 2:5-11)। अपने ऊपर अधिकार करने वालों की बात स्वेच्छा से और दिल से मानने वालों के लिए स्वेच्छा से अधीन होना अपमान नहीं बल्कि सराहना है। पत्नी अपने पति के अधीन होकर अपने आप को नीचा नहीं कर लेती है। इसके बजाय अधीन होकर वह साराह और बाइबल की अन्य भक्त स्त्रियों की तरह अपने भले स्वभाव को ही दिखाती है: ''और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से सवांरती और अपने-अपने पति के आधीन रहती थीं'' (1 पतरस 3:5)।

आधुनिक पत्नी के लिए यह आवश्यक है कि यदि उसका पति मसीही है तो वह उसके अधीन रहे पर यदि वह मसीही नहीं है तो भी उसे अधीन होना चाहिए (1 पतरस 3:1, 2)। उसके अधीन होने का कारण अपने सम्मानीय व्यवहार के द्वारा उसे मसीह के लिए जीतना ही नहीं बल्कि आज्ञा मानने की परमेश्वर की शर्त को मानना भी है (1 पतरस 3:5, 6)।

भय मानना

पौलुस ने लिखा, ''पत्नी भी अपने पति का भय माने'' (इफिसियों 5:33ख)। ''भय माने'' *phobatai* का अनुवाद है (मत्ती 2:22; 14:5, 30; 17:6) और इसका अर्थ

''आदरपूर्वक'' है (प्रेरितो के काम 10:2, 35; 13:16, 26; 1 परतस 2:17)। सम्बन्ध वहोने के कारण में पत्नी के लिएअपने पति के प्रति सम्मान दिखाना आवश्यक है। यदि वह ऐसा नहीं कर पाती तो वह उतनी ही गलत है, जितनी कलीसिया के साथ अपने सम्बन्ध में यीशु की अगुआई की भूमिका का सम्मान न करने वाली कलीसिया (इफिसियों 5:24)।

अपने पति को सम्मान देने वाली पत्नी की किस्म के एक उदाहरण के रूप में साराह का नाम दिया गया है। वह अब्राहम की आज्ञा ही नहीं मानती थी बल्कि उसे ''स्वामी'' भी कहती थी (1 पतरस 3:6; उत्पत्ति 18:12)। यदि ''श्रीमान'' का अर्थ किसी भी प्रकार ''स्वामी'' है तो इससे सम्मानपूर्वक आज्ञा मानने के द्वारा बात मानने वाला मन नहीं होगा। इसका अभिप्राय यह होना चाहिए कि वह अब्राहम की आज्ञा मानती थी क्योंकि वह उसे ''स्वामी'' के रूप में सम्मान देती थी यानी वह उसे ईश्वरीय अर्थ में नहीं, बल्कि मानवीय अर्थ में अधिकार वाले के रूप में प्रभु मानती थी।

कुछ लोगों का निष्कर्ष है कि साराह अपनी संस्कृति के अनुसार काम कर रही थी, जैसा कि वे संस्कृति के अनुसार स्त्रियों की वेशभूषा के पतरस के निर्देश पर भी विचार करते हैं (1 पतरस 3:3-5)। ऐसे निष्कर्ष से इस वाक्य की नासमझी का पता चलता है। परतस यूनानी मुहावरे *ou ... alla* का इस्तेमाल कर रहा था, जिसका अनुवाद इस वाक्य में ''नहीं ... परन्तु'' हुआ है। यूनानी में यह संरचना पहले विचार को नकराने के लिए दूसरे विचार पर ज़ोर देने का ढंग है। (मत्ती 10:34; यूहन्ना 12:47; 1 कुरिन्थियों 1:17 में इसके उदाहरण देखे जा सकते हैं।) राबर्ट डब्ल्यू. फंड ने कहा, ''*ou ... alla* का अर्थ 'उतना नहीं, जितना... है, जिसमें पहले तत्व को पूरी तरह से नकारा नहीं, बल्कि थोड़ा कम महत्व जाता है।''[1]

पतरस यह नहीं लिख रहा था कि स्त्रियां अपने आप को गूंथे हुए बालों, सोने, जेवरातों या वस्त्रों से संवारें, नहीं तो इसका अर्थ यह होता कि स्त्रियां कपड़े नहीं पहन सकतीं क्योंकि सूची में वस्त्रों को शामिल किया है। वह इस यूनानी मुहावरे के साथ यह कह रहा था कि मसीही स्त्री का ध्यान अपने बाहरी व्यक्तित्व के बजाय भीतरी व्यक्तित्व पर हो। 1 तीमुथियुस 2:9, 10 में पौलुस ने *me ... alla* (''नहीं ... परन्तु'') मुहावरे का इस्तेमाल करके पतरस की बात का समर्थन किया। यह संरचना जिसका अर्थ *ou ... alla* वाला ही है, जिसका अर्थ है ''उतना नहीं, जितना यह,'' ''A उतना नहीं, जितना B'' (यूहन्ना 6:27 से तुलना करें)। स्त्री को अपनी बाहरी दिखावट पर उतना ध्यान नहीं देना चाहिए जितना अपने भीतरी गुणों पर।

सारांश

इसका सारांश निर्विवाद है कि पति/पति सम्बन्ध में परमेश्वर ने पति को अगुआई करने की ज़िम्मेदारी दी है। दिशा प्रदान करने और अगुआई करने में उसके लिए पत्नी के प्रति ऐसा प्रेम और सम्भाल दिखानी आवश्यक है जिससे वह अपने आप उसका आदर करने लगे। पत्नी के लिए इस प्रबन्ध का सम्मान करना और अधीन होना आवश्यक है, जब

तक उसका पति उससे किसी ऐसी चीज़ की मांग नहीं करता जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हो।

पत्नी के लिए वह सब कुछ बनने के लिए जो वह अपने पति के लिए बन सकती है, बहुत प्रार्थना और विचार अवश्यक है, जैसे उसे उसके लिए सब कुछ बनने की ज़िम्मेदारी दी गई है। अपनी सामर्थ और अगुआई के रूप में परमेश्वर के वचन के साथ मसीही पत्नी अपने पति को हर दिन की चुनौती का सामना करने, दुखी मन को सांत्वना देने, उसकी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने, घर के लिए आत्मिक माहौल बनने के लिए और शान्ति और समन्वय का, चैन से भरा माहौल बनाने के लिए जिससे उसे उससे दूर होने पर उससे मिलने को तड़प हो, साहस देती है। उसके जीवन में ये सब खूबियां देकर वह अपने जीवन को पूर्ण करती है।

टिप्पणी

[1] रार्बट डबल्यू. फंडू, *ए ग्रीक ग्रामर आफ़ द न्यू टैंस्टामेंट* (शिकागो: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1961), 233.